अमर चित्र कथा

कालिदास

संख्या ६०० ₹१०



तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज़्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

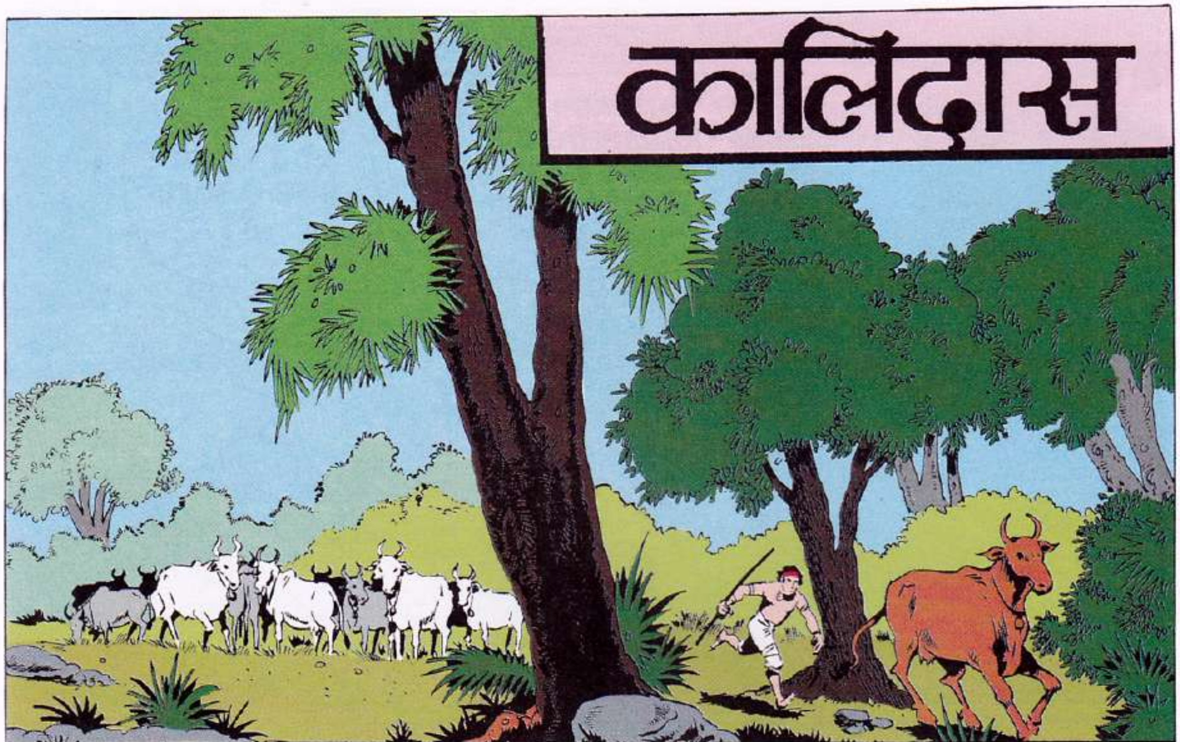
समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक	मुखपृष्ठ
याग्या शर्मा	दिलिप कदम	अनंत पै	प्रताप मुलिक

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

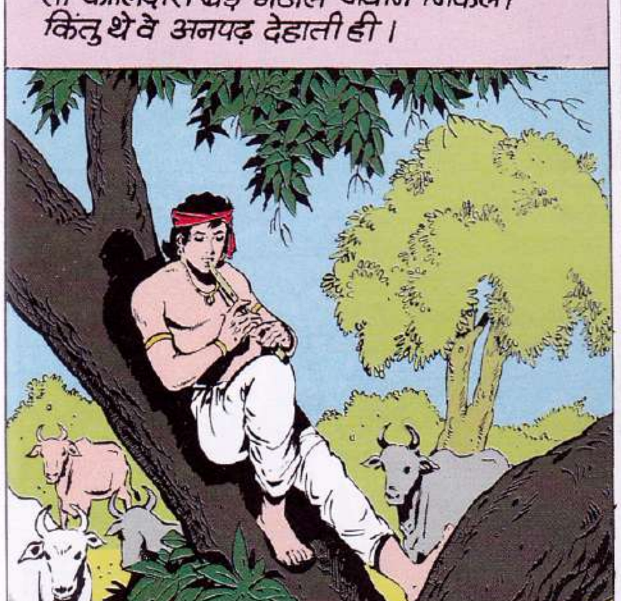
ISBN 978-81-8482-273-1
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri (East), Mumbai - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India

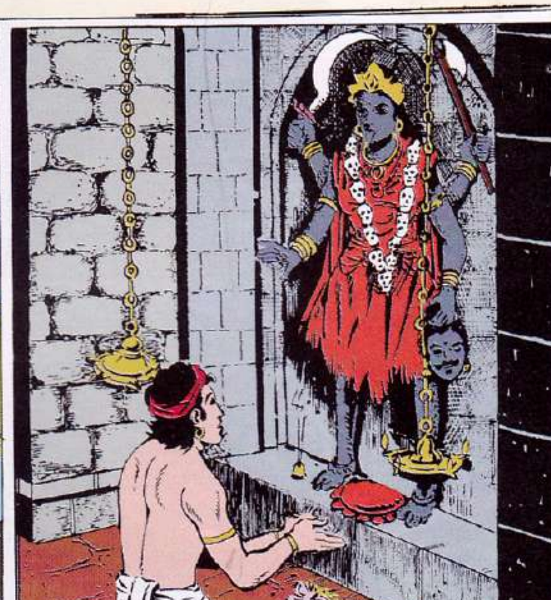
कालिदास



कालिदास संसार के महानतम कवियों में गिने जाते हैं परंतु उन्होंने शिक्षा नाम मात्र को भी नहीं पायी थी-- उतनी भी नहीं जो सामान्य ब्राह्मण बालकों को उस जमाने में दी जाती थी। उनके माता-पिता उन्हें पाँच वर्ष का ही छोड़ कर चल बसे थे और उनका लालन-पालन किसी दयालु ग्वाले ने किया। वह भी अशिक्षित था। कालिदास पशुओं की देख-भाल में उसका हाथ बँटाते थे।

खाने में दूध, दही और मक्खन की कमी न थी सो कालिदास बड़े गठीले जवान निकले। किंतु थे वे अनपढ़ देहाती ही।

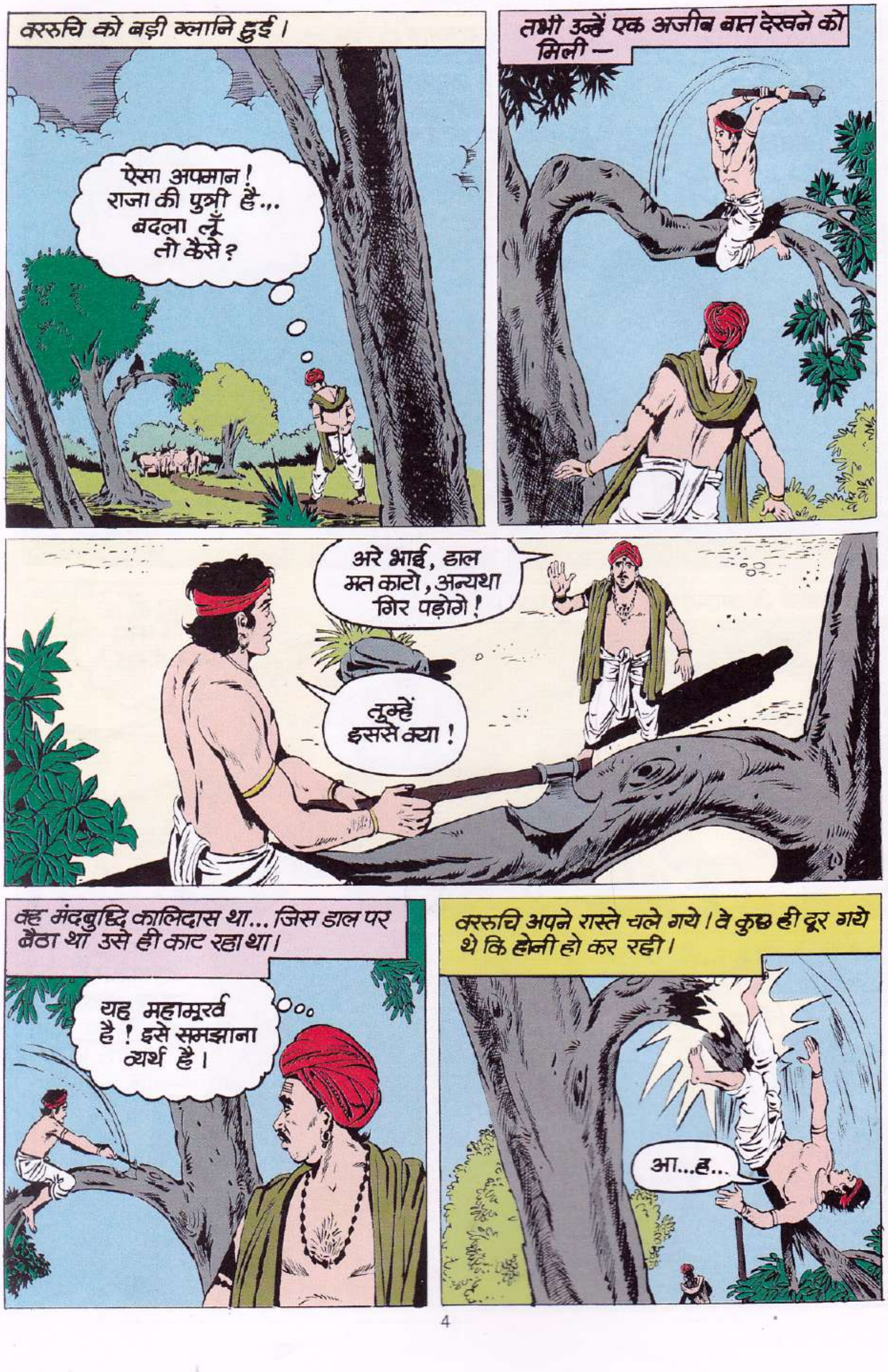




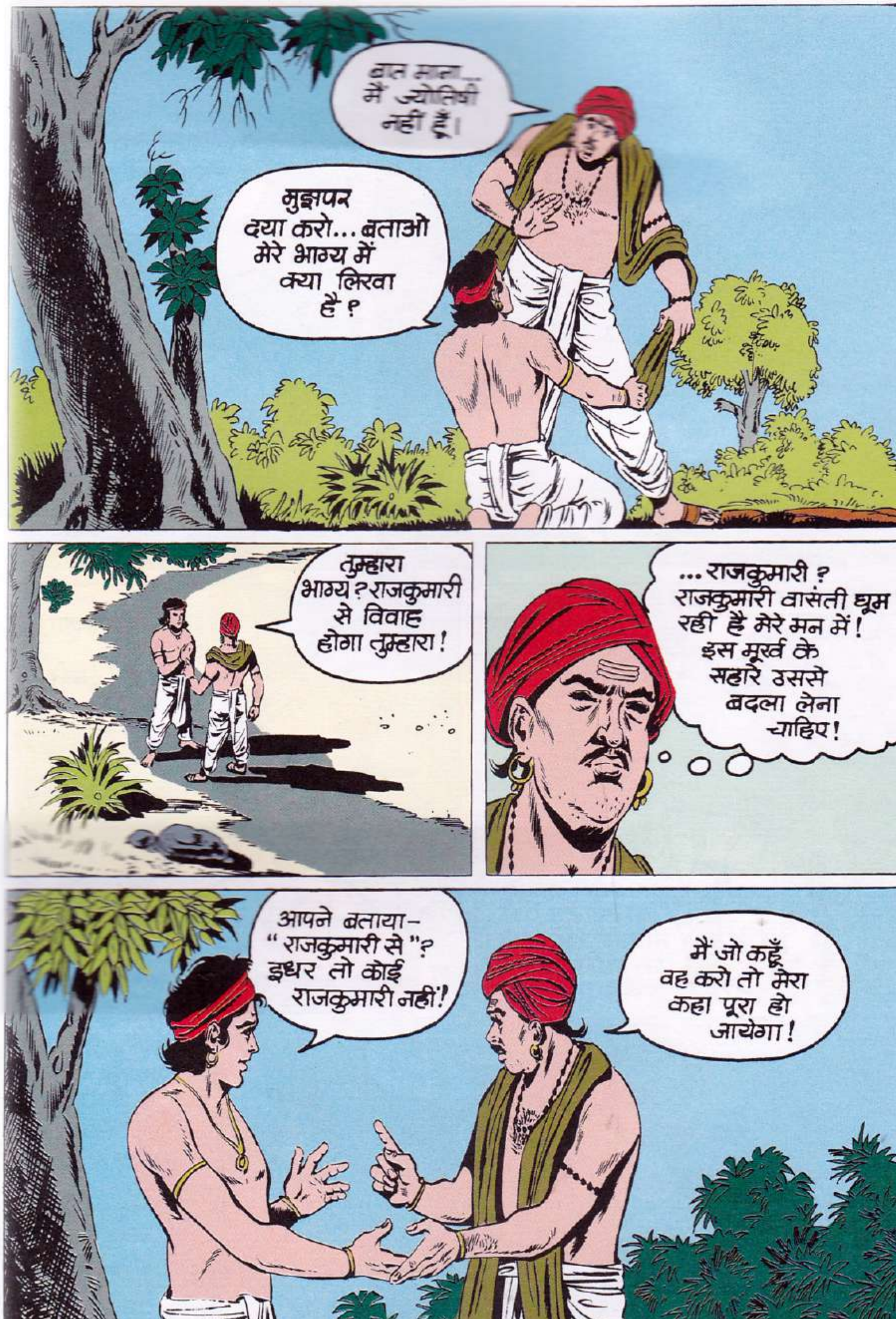
गायें चराने से जो समय मिलता उसमें वे गाँव के काली के मंदिर में जा कर पूजा किया करते थे। इसीसे उनका नाम कालिदास पडा।


संयोग की बात कि उन दिनों जो वाराणसी के नरेश थे उनकी कन्या बड़ी रूपवान् और गुणवान थी।
मुझे चिंता है तो यही कि वासंती के लिए उसके जैसा ही रूपवान् गुणवान् वर कहाँ मिलेगा?
वररुचि जो हैं! वे सब प्रकार से उपयुक्त हैं।
वररुचि? वे विद्वान तो हैं किंतु वासंती को रिझाना सहज नहीं है और...
उससे कह कर तो देखें ताकि उसके मन का कुछ पता चले।
वासंती को अपने ज्ञान का बड़ा अभिमान था।
कोई पुरुष है आपकी दृष्टि में जो शास्त्रार्थ में मुझे पराजित कर सके? ऐसा पुरुष खोज लाइए ...वही मुझे पाने का अधिकारी हो सकता है।
वररुचि ने चुनौती स्वीकार कर ली। तब वासंती घबरायी क्योंकि वररुचि उसे पसंद न था और वह उससे विवाह करना नहीं चाहती थी।
वह है विद्वान! कहीं मुझे हरा न दे! पर मैं ऐसा नहीं होने दूँगी।

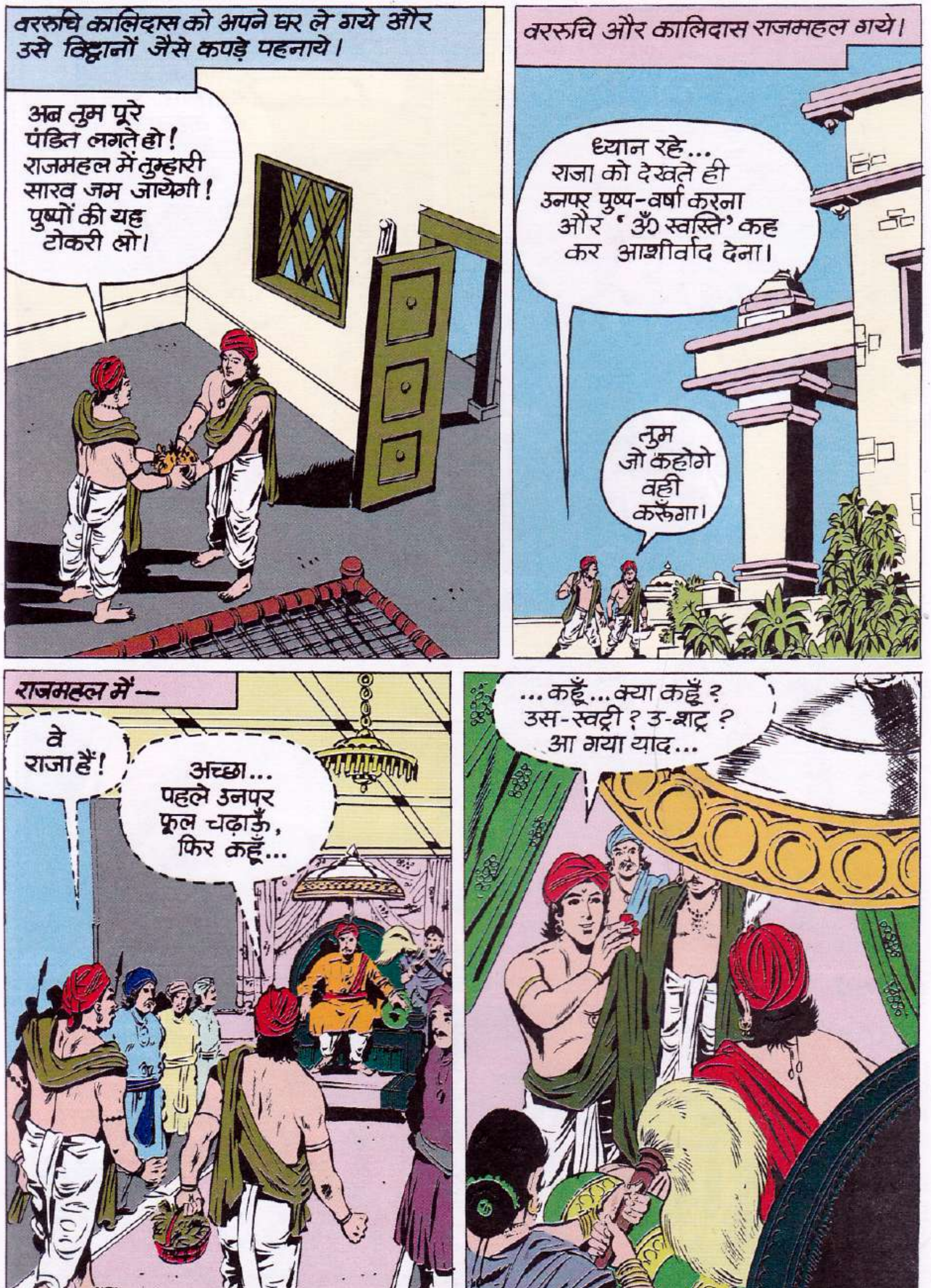

उसके साथ चाल करनी होगी।
शास्त्रार्थ के दिन —
शास्त्रार्थ मूक होगा। मैं संकेतों द्वारा प्रश्न करूँगी आप संकेतों द्वारा ही उत्तर दें।
स्वीकार है।
तब वासंती ने अपनी एक उँगली उठायी।
भगवान् ही जानें कि क्या प्रश्न है यह!
वररुचि ने हार मान ली। वासंती खुशी से फूल उठी।
मैं प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकता।
नमस्कार, महापंडित! पधार जाइए!

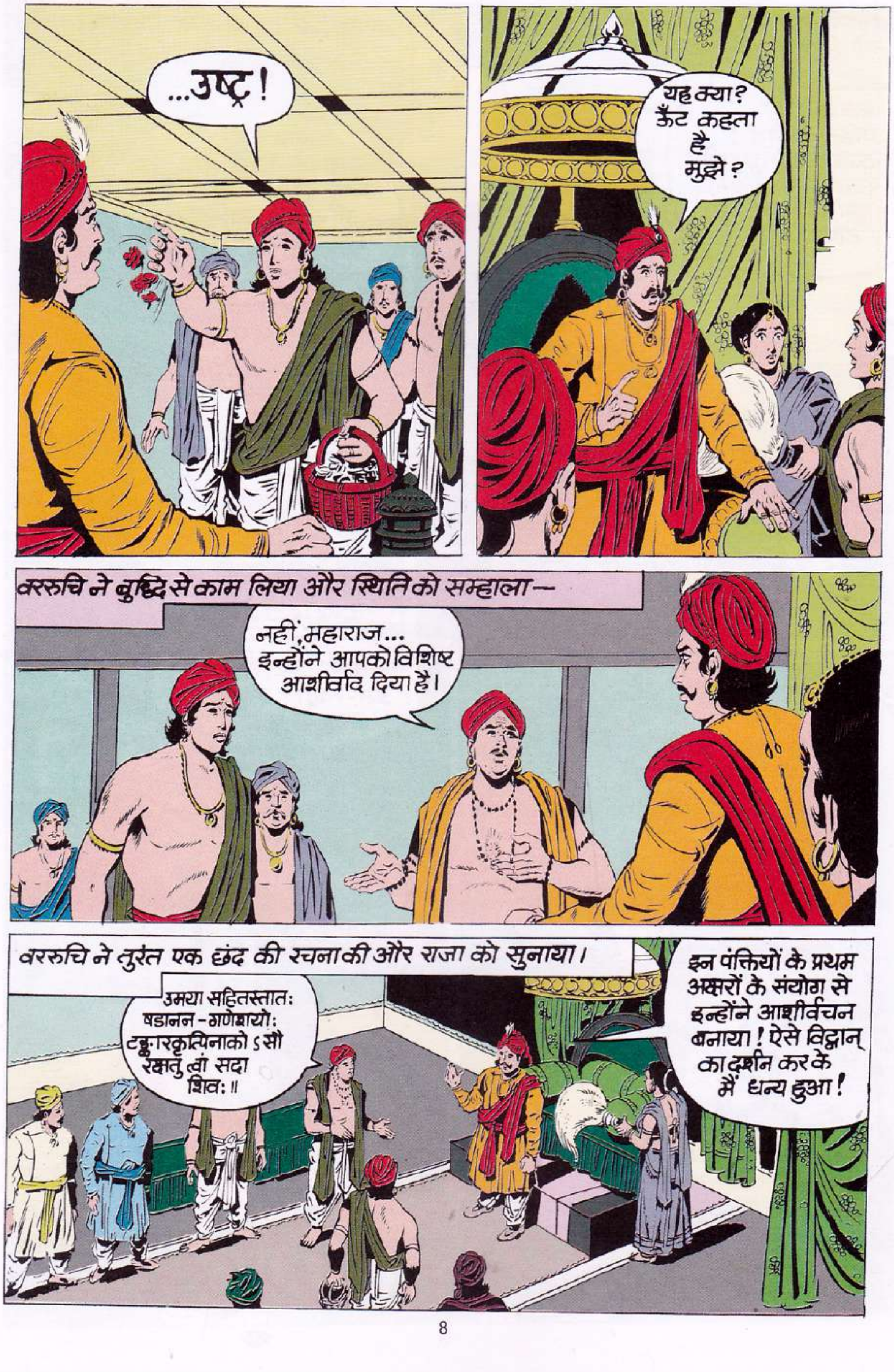

वररुचि को बड़ी ग्लानि हुई।
ऐसा अपमान! राजा की पुत्री है... बदला लूँ तो कैसे?
तभी उन्हें एक अजीब बात देखने को मिली —
अरे भाई, डाल मत काटो, अन्यथा गिर पड़ोगे!
तुम्हें इससे क्या!
वह मंदबुद्धि कालिदास था... जिस डाल पर बैठा था उसे ही काट रहा था।
यह महामूर्ख है! इसे समझाना व्यर्थ है।
वररुचि अपने रास्ते चले गये। वे कुछ ही दूर गये थे कि होनी हो कर रही।
आ...ह...

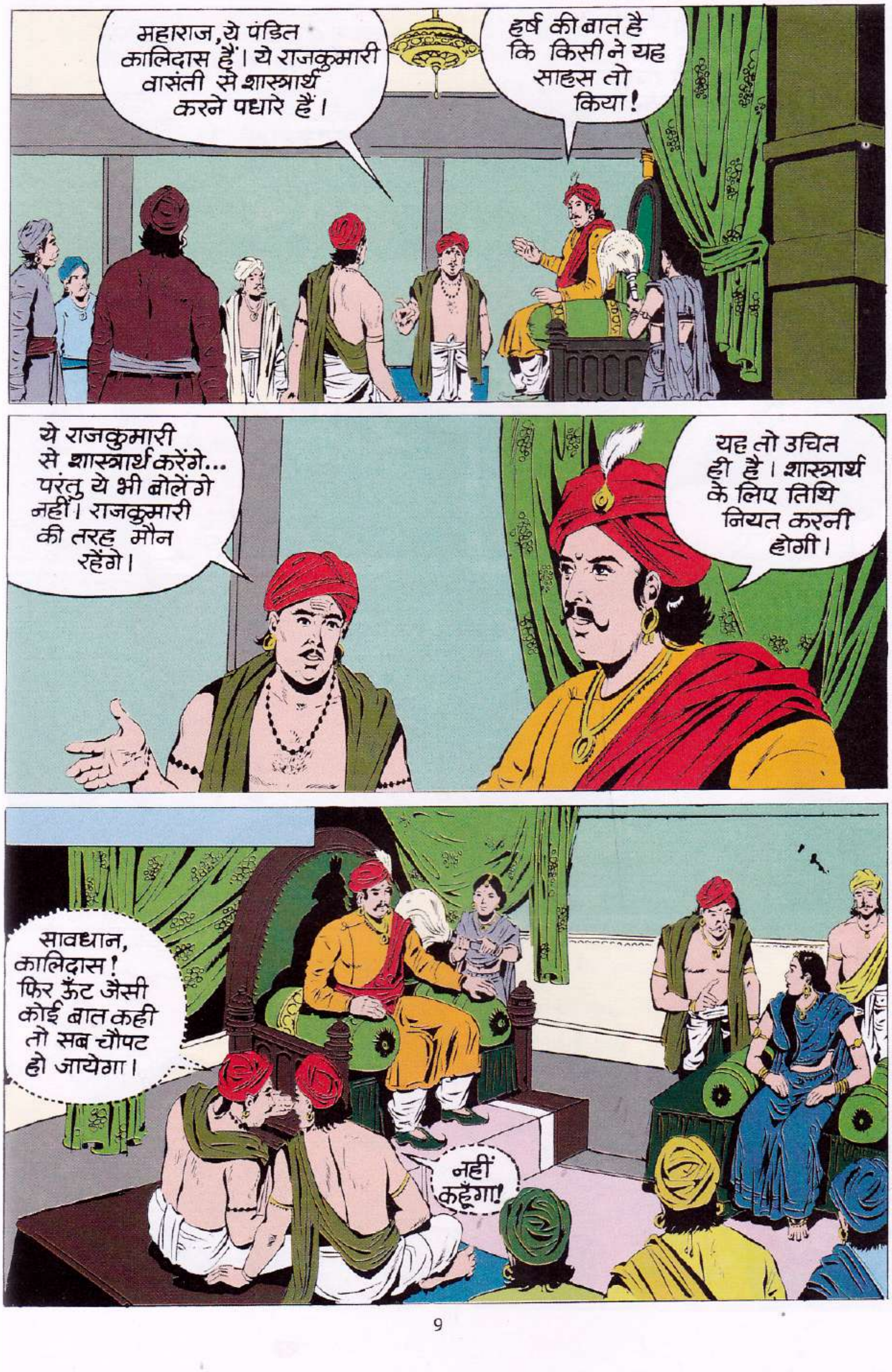

सुनो, महाराज... ठहरो...
... तुमसे एक बात पूछनी है।
कालिदास भाग कर वररुचि के पास पहुँचा।
तुमने कहा था कि मैं गिर पड़ूँगा। यह तुमने जाना कैसे?
इसमें जानने की क्या बात! जो भी देखता वही बता देता कि आगे क्या होनेवाला है!
पर मैं तो नहीं समझा। तुम कोई ज्योतिषी लगते हो!
मैं ज्योतिषी नहीं हूँ।
हो कैसे नहीं! तुमने पहले ही बता दिया कि मैं पेड़ से गिरूँगा!



बात मानो... मैं ज्योतिषी नहीं हूँ।
मुझपर दया करो... बताओ मेरे भाग्य में क्या लिखा है ?
तुम्हारा भाग्य ? राजकुमारी से विवाह होगा तुम्हारा !
... राजकुमारी ? राजकुमारी वासंती घूम रही है मेरे मन में ! इस मूर्ख के सहारे उससे बदला लेना चाहिए !
आपने बताया– " राजकुमारी से " ? इधर तो कोई राजकुमारी नहीं !
मैं जो कहूँ वह करो तो मेरा कहा पूरा हो जायेगा !


वररुचि कालिदास को अपने घर ले गये और उसे विद्वानों जैसे कपड़े पहनाये।
अब तुम पूरे पंडित लगते हो! राजमहल में तुम्हारी साख जम जायेगी! पुष्पों की यह टोकरी लो।
वररुचि और कालिदास राजमहल गये।
ध्यान रहे... राजा को देखते ही उनपर पुष्प-वर्षा करना और 'ॐ स्वस्ति' कह कर आशीर्वाद देना।
तुम जो कहोगे वही करूँगा।
राजमहल में —
वे राजा हैं!
अच्छा... पहले उनपर फूल चढ़ाऊँ, फिर कहूँ...
...कहूँ...क्या कहूँ ? उस-स्वट्री ? उ-शट्र ? आ गया याद...


...उष्ट्र !
यह क्या? ऊँट कहता है मुझे ?
वररुचि ने बुद्धि से काम लिया और स्थिति को सम्हाला –
नहीं, महाराज... इन्होंने आपको विशिष्ट आशीर्वाद दिया है।
वररुचि ने तुरंत एक छंद की रचना की और राजा को सुनाया।
उमया सहितस्तात: षडानन - गणेशयो: टङ्कारकृत्पिनाकोऽसौ रक्षतु त्वां सदा शिव: ॥
इन पंक्तियों के प्रथम अक्षरों के संयोग से इन्होंने आशीर्वचन बनाया ! ऐसे विद्वान् का दर्शन करके मैं धन्य हुआ !


महाराज, ये पंडित कालिदास हैं। ये राजकुमारी वासंती से शास्त्रार्थ करने पधारे हैं।
हर्ष की बात है कि किसी ने यह साहस तो किया!
ये राजकुमारी से शास्त्रार्थ करेंगे... परंतु ये भी बोलेंगे नहीं। राजकुमारी की तरह मौन रहेंगे।
यह तो उचित ही है। शास्त्रार्थ के लिए तिथि नियत करनी होगी।
सावधान, कालिदास! फिर ऊँट जैसी कोई बात कही तो सब चौपट हो जायेगा।
नहीं कहूँगा!


हाथों से जो चाहो करना — बस, मुँह मत खोलना... नहीं तो राजकुमारी से विवाह का अवसर हाथ से निकल जायेगा।
मौन शास्त्रार्थ शुरू हुआ। पहले की तरह इस बार भी वासंती ने एक उँगली उठायी।
पुरुष है तो बड़ा आकर्षक! किंतु क्या मेरा प्रश्न भी समझ पायेगा कि परमेश्वर ही एकमात्र सत्य है, शाश्वत है?
किन्तु कालिदास इसका आशय कुछ और ही समझा —
अच्छा, तू मेरी एक आँख फोड़ना चाहती है!
मैं तेरी दोनों फोड़ दूँगा!


प्रश्न समझा और उत्तर भी ठीक दिया।
इसका मत है कि परमात्मा के अतिरिक्त व्यक्तिगत आत्मा भी सत्य है, शाश्वत है। इस प्रकार ये दो हुए, एक नहीं।
वासंती ने दूसरे प्रश्न के रूप में एक हाथ की पाँचों उँगलियाँ उठायीं।
शरीर पाँच तत्त्वों – अग्नि, वायु, आकाश, जल और भूमि से बना है।
मुझे तमाचा भी मारना चाहती है! अच्छा...
...तू तमाचा मारेगी तो मैं घूँसा मारूँगा!


कैसा सटीक उत्तर दिया है ! तत्व पाँच हैं तथापि मानव शरीर में वे एक हो जाते हैं।
राजकुमारी वासंती ने हार मान ली और उसे कालिदास को ब्याह दिया गया।
मेरी विद्वत्ता धरी रह गयी और यह मूर्ख जीत गया ! राजकुमारी है तो स्त्री ही... मूर्ख है... इसकी सुंदरता पर रीझ गयी।
विवाह कर के कालिदास राजकुमारी को अपनी झोंपड़ी में ले गया।
मेरे पति बड़े अपरिग्रही जान पड़ते हैं। तथापि इनकी विद्वत्ता के कारण हमारा जीवन सुखी रहेगा।
तभी कहीं पास में ऊँट की आवाज़ सुनाई दी –
बुड़-बुड़
बुड़-बुड़


वासंती को याद आया कि कालिदास ने उसके पिता को ऊँट कहा था।
यह कौन-सा पशु है?
ह:-उट्र-
उट्र!? अर्थात् उष्ट्र?
हाँ-हाँ... उष्...उष्...ट्र-
संस्कृत का साधारण शब्द है... बोलने में यह अटक क्यों?
संस्कृत? मैंने नहीं पढ़ी कभी!
वासंती को धक्का-सा लगा।
विद्वान नहीं हो तुम?
नहीं, ग्वाला हूँ।

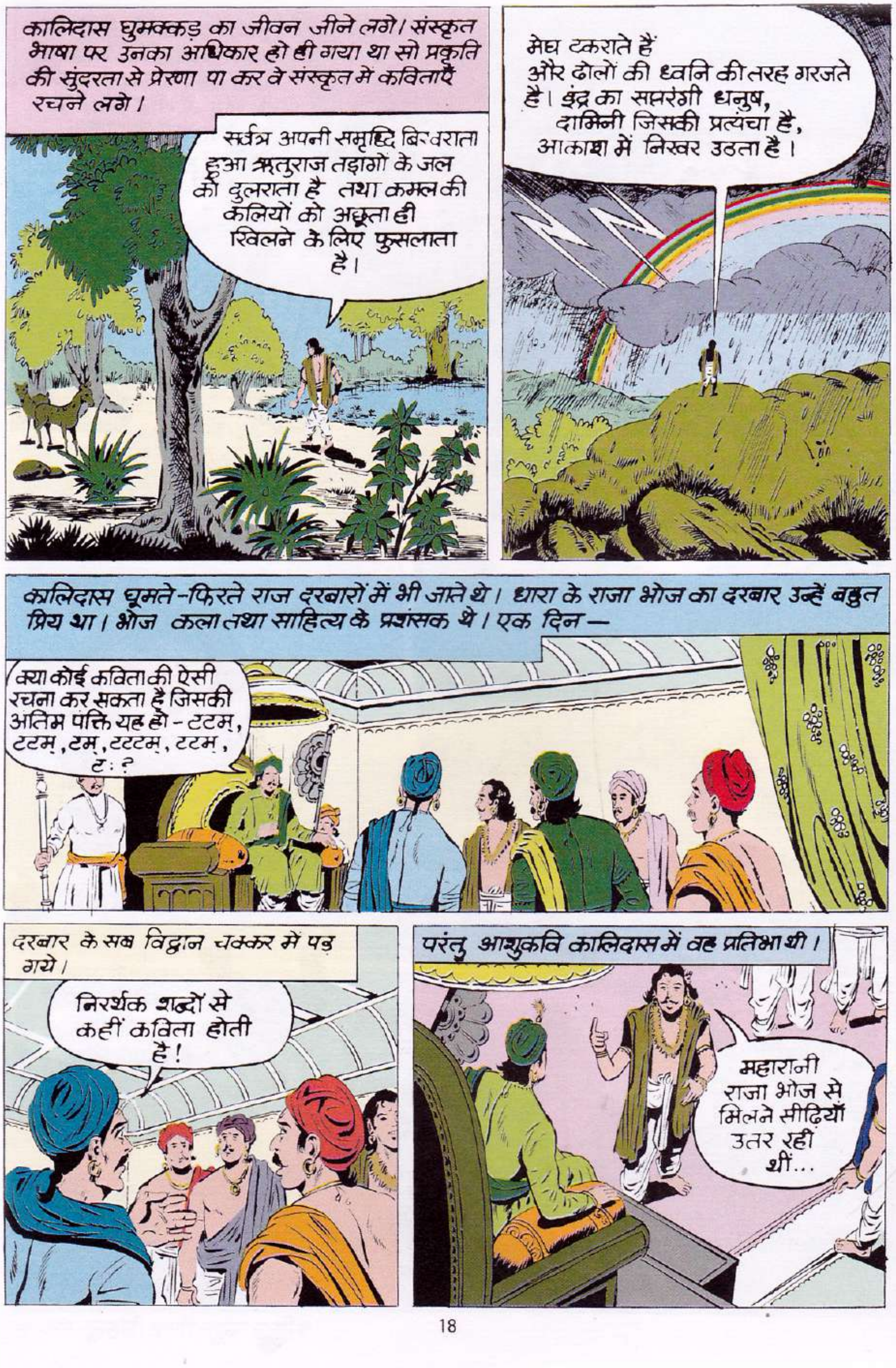

ग्वाला ?
बिगड़ो मत ! मैं सदा तुम्हें खुश रखने की कोशिश करूँगा। सबेरे ताजा दुहा दूध ला कर पिलाऊँगा।
वररुचि ने मेरे साथ छल किया ! किंतु मैं मूर्ख को पति स्वीकार नहीं करूँगी।
चले जाओ ! मेरा पति तो कोई महान् विद्वान् ही हो सकता है... तुम तो निरे गँवार हो !
वह फौरन वहाँ से चल पड़ा तो वासंती को पछतावा हुआ।
क्यों मैं ऐसी कठोर हो गयी ! मैं क्या जानती थी कि यह सचमुच चला जायेगा !


वासंती की बात से कालिदास को बड़ी ठेस लगी।
मैं विद्वान् बनूँगा! पर कैसे?
माँ काली का मंदिर है। माँ से ही माँगूँ कि मुझे विद्या दो।
कालिदास मूर्त्ति के आगे ध्यान लगा कर बैठ गया।
कई दिन उसने न कुछ खाया, न पिया।

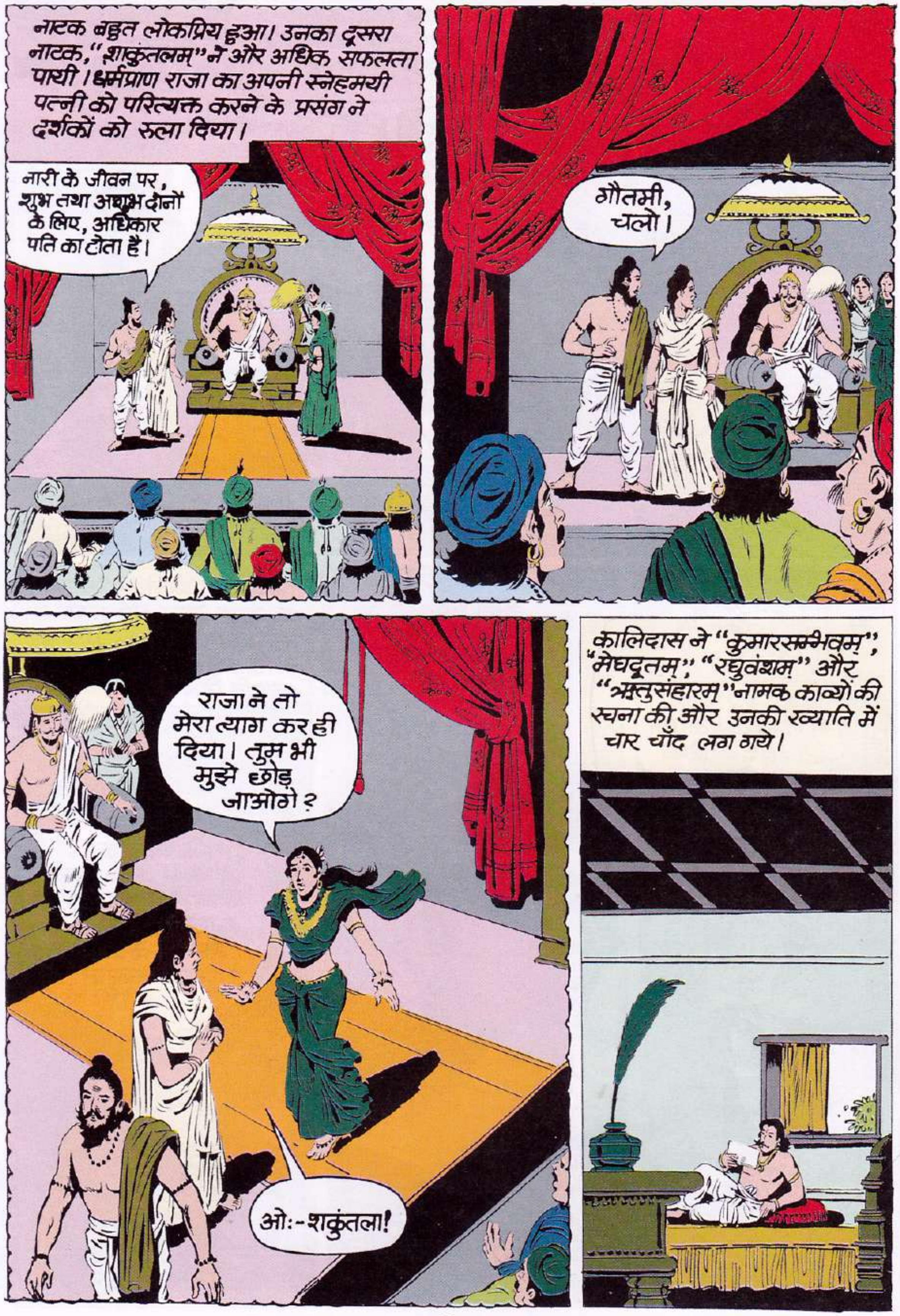


* क्या तुम्हारी वाणी सुधर गयी?

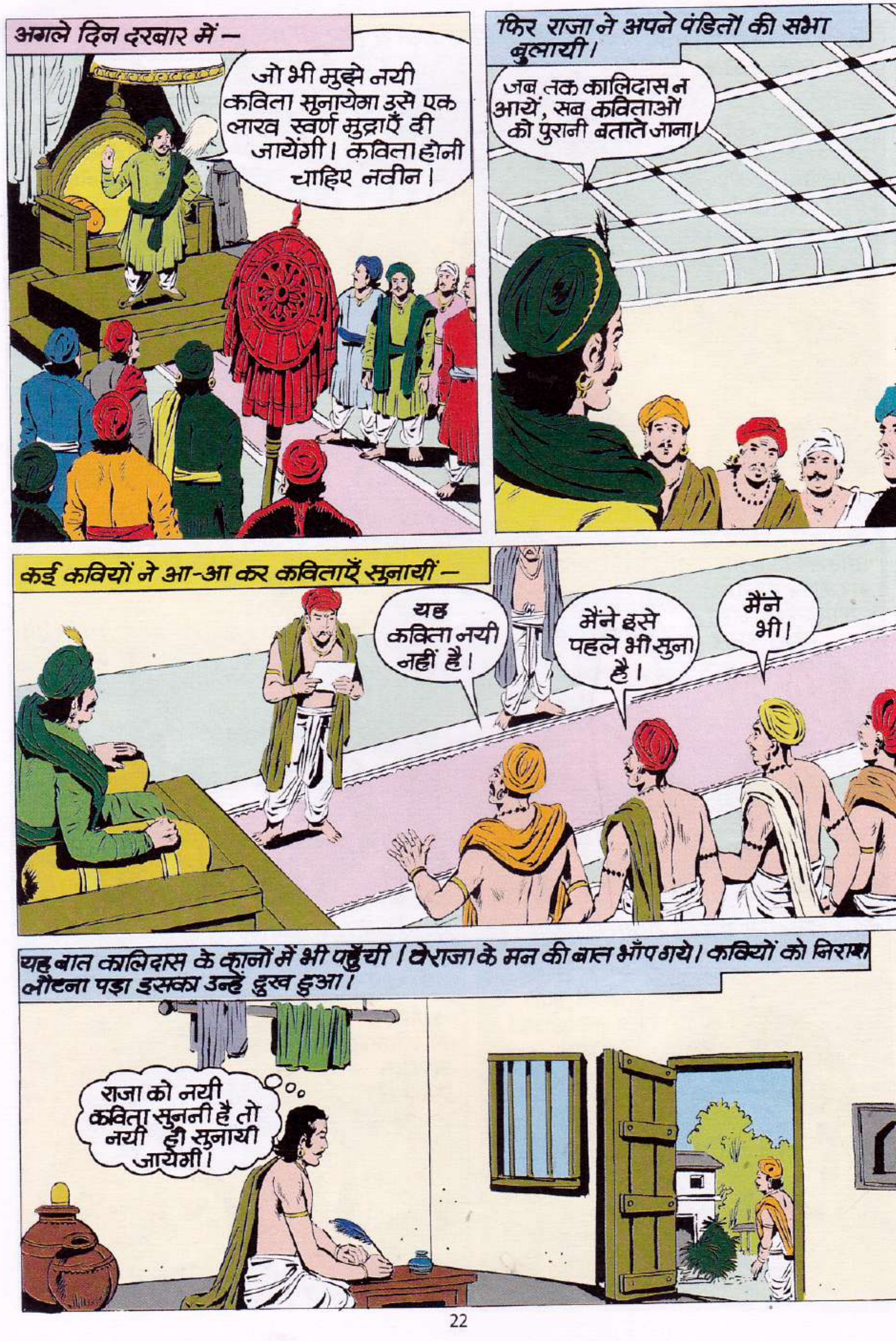

ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा मुझे तुमने ही दी। तुम्हारे प्रति आभार प्रकट करने के लिए मैं तीन रचनाएँ उन तीन शब्दों से प्रारम्भ करूँगा जो तुमने अभी-अभी कहे हैं।
मेरा आभार मानने की आवश्यकता कहाँ है! मैं तुम्हारी पत्नी हूँ।
पत्नी थीं...
...किंतु तुमने मुझे ज्ञान प्राप्ति के मार्ग पर लगाया इसलिए अब मेरी गुरु हो।
वासंती को फिर धक्का लगा और क्रोध भी आया। पर कालिदास जब किसी भी तरह उसे पत्नी मानने को तैयार नहीं हुए तो उसने उन्हें शाप दे दिया —
तुम्हारी मृत्यु नारी के हाथों होगी।

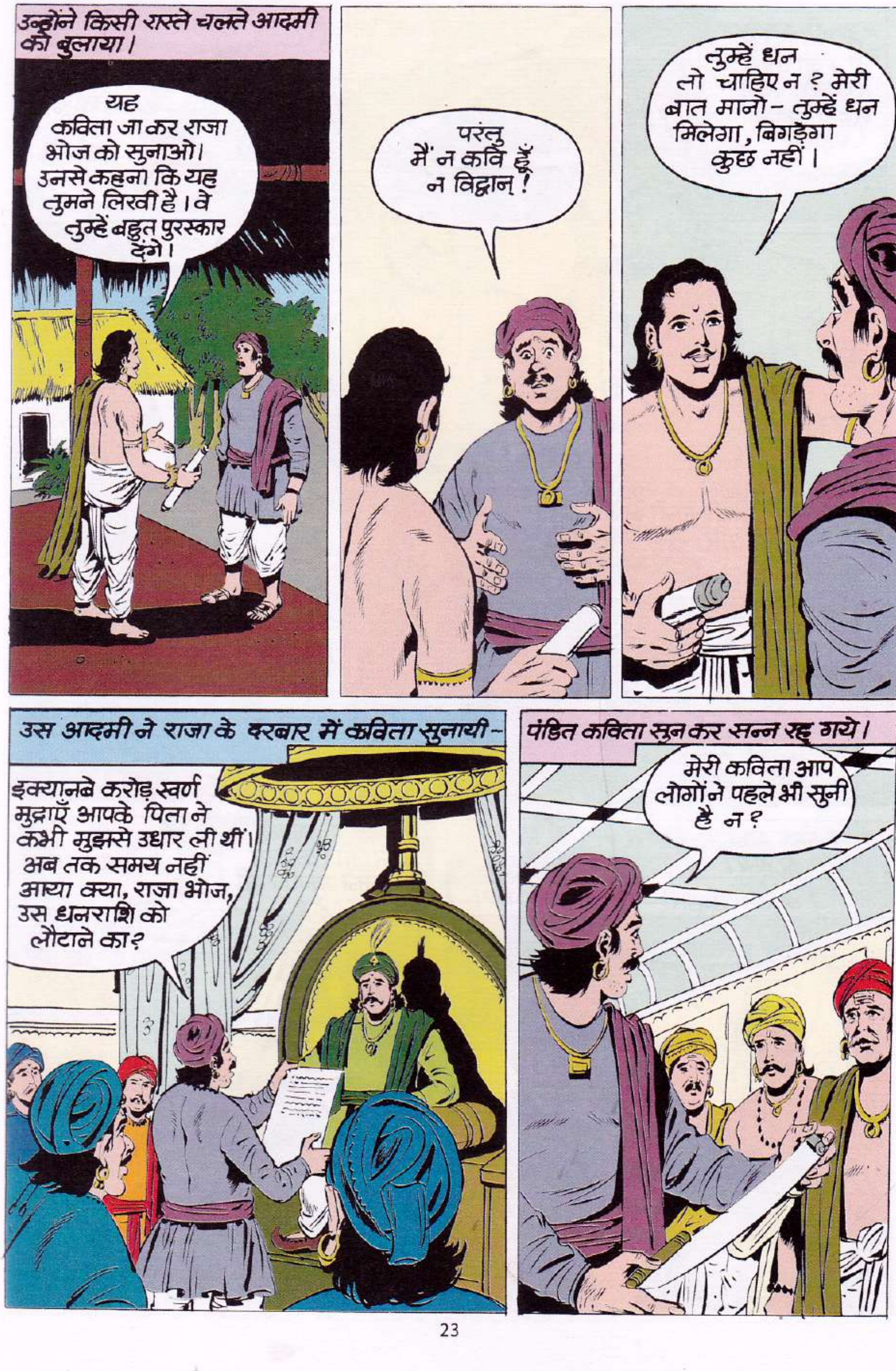

कालिदास घुमक्कड़ का जीवन जीने लगे। संस्कृत भाषा पर उनका अधिकार हो ही गया था सो प्रकृति की सुंदरता से प्रेरणा पा कर वे संस्कृत में कविताएँ रचने लगे।
सर्वत्र अपनी समृद्धि बिखराता हुआ ऋतुराज तड़ागों के जल को दुलराता है तथा कमल की कलियों को अछूता ही खिलने के लिए फुसलाता है।
मेघ टकराते हैं और ढोलों की ध्वनि की तरह गरजते हैं। इंद्र का सप्तरंगी धनुष, दामिनी जिसकी प्रत्यंचा है, आकाश में निखर उठता है।
कालिदास घूमते-फिरते राज दरबारों में भी जाते थे। धारा के राजा भोज का दरबार उन्हें बहुत प्रिय था। भोज कला तथा साहित्य के प्रशंसक थे। एक दिन —
क्या कोई कविता की ऐसी रचना कर सकता है जिसकी अंतिम पंक्ति यह हो – टटम्, टटम्, टम्, टटटम्, टटम्, टः?
दरबार के सब विद्वान चक्कर में पड़ गये।
निरर्थक शब्दों से कहीं कविता होती है!
परंतु आशुकवि कालिदास में वह प्रतिभा थी।
महारानी राजा भोज से मिलने सीढ़ियाँ उतर रहीं थीं...

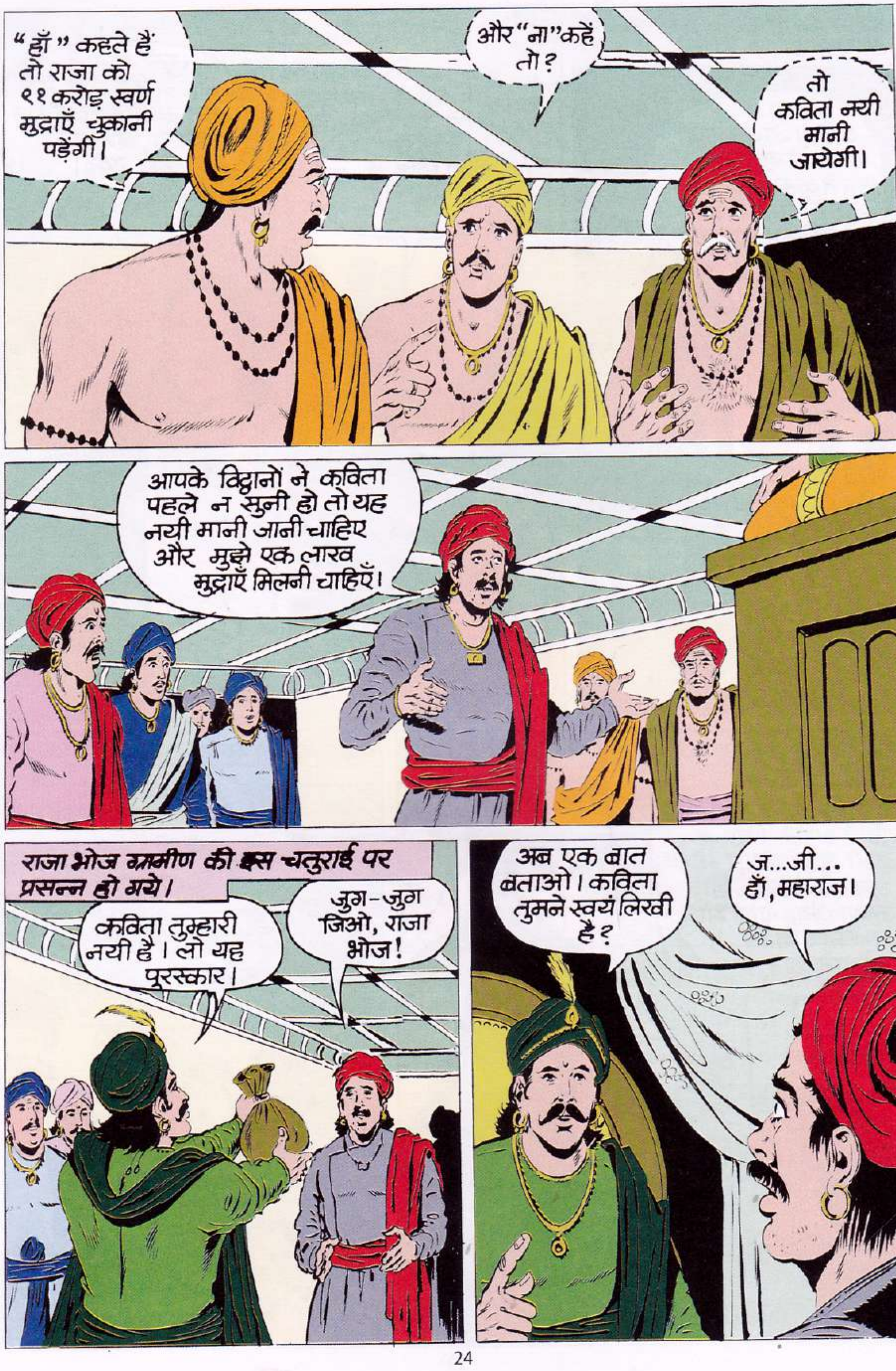

... कि चंदन के लेप से भरा सोने का कटोरा उनके हाथ से छूट गिरा...
...यह ध्वनि करता हुआ : टटम् ,टटम् , टम् , टटटम् , टटम् , टः
कालिदास, धन्य है तुम्हारी कल्पना!
कालिदास की इच्छा हुई कि दरबारी जीवन पर नाटक लिखें।
किसी सुंदरी युवती से किसी राजा का प्रेम इस नाटक का विषय होगा।
प्रश्न यह है कि नये लेखक की रचना का स्वागत भी होगा या नहीं?
"मालविकाग्निमित्रम्" कालिदास का पहला नाटक था। उसकी प्रस्तावना में उन्होंने इच्छा प्रकट की कि उन्हें नाटककार के रूप में ख्याति मिले।
"बुद्धिमान् व्यक्ति रचना का अध्ययन करके उसके विषय में अपना मत बनाते हैं; दूसरों के मत को केवल मूर्ख अपनाते हैं।"


नाटक बहुत लोकप्रिय हुआ। उनका दूसरा नाटक, "शाकुंतलम्" ने और अधिक सफलता पायी। धर्मप्राण राजा का अपनी स्नेहमयी पत्नी को परित्यक्त करने के प्रसंग ने दर्शकों को रुला दिया।
नारी के जीवन पर, शुभ तथा अशुभ दोनों के लिए, अधिकार पति का होता है।
गौतमी, चलो।
राजा ने तो मेरा त्याग कर ही दिया। तुम भी मुझे छोड़ जाओगे?
ओः-शकुंतला!
कालिदास ने "कुमारसम्भवम्", "मेघदूतम्", "रघुवंशम्" और "ऋतुसंहारम्" नामक काव्यों की रचना की और उनकी ख्याति में चार चाँद लग गये।


राजा भोज कालिदास की मैत्री का बड़ा सम्मान करते थे फिर भी एक छोटी-सी बात पर उनमें अनबन हो गयी।
कालिदास, तुम अपने राजा की प्रशंसा में कविता लिखने से इन्कार क्यों करते हो?
आप निस्संदेह महान् राजा हैं परंतु किसी नाशवान् प्राणी की प्रशंसा करना कविता का लक्ष्य नहीं है।
तुम मेरे दरबार में रहते हो फिर भी और कवियों की तरह मेरे गुण नहीं गाते! आश्चर्य की नहीं है यह बात?
है तो सही।
राजा भोज के इस व्यवहार से दुखी हो कर कालिदास किसी गाँव में जा बसे।
बहुत दिन बीत गये तो राजा को चिंता हुई।
मुझे ही अपने मित्र को खोजना होगा।
दूर-दूर तक कालिदास की खोज में आदमी भेजे गये पर वे मिले नहीं। किंतु राजा भोज ने प्रयास छोड़ा नहीं तब —
कालिदास को खोजने का एक उपाय है।

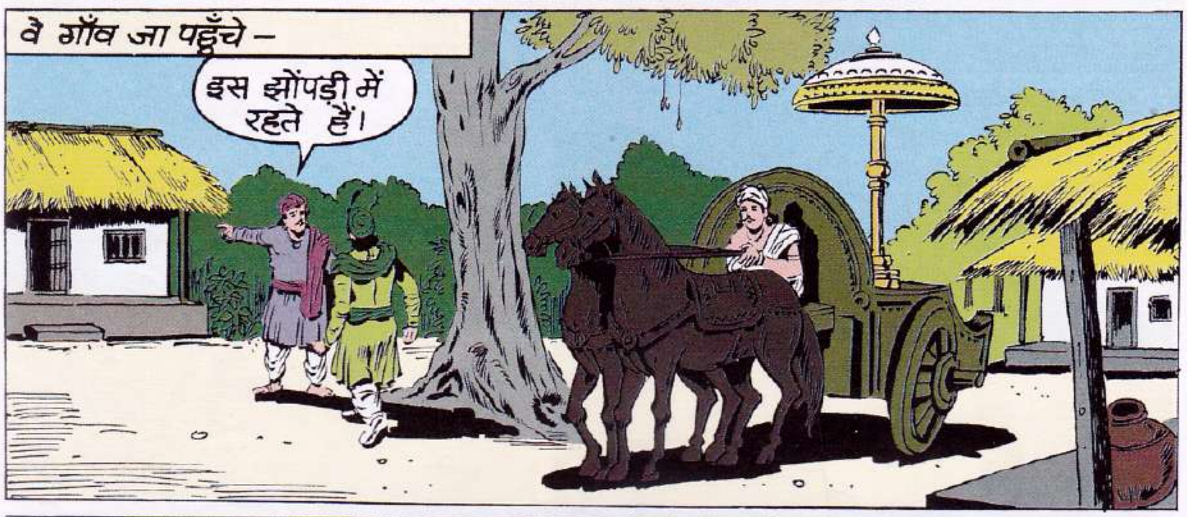

अगले दिन दरबार में –
जो भी मुझे नयी कविता सुनायेगा उसे एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ दी जायेंगी। कविता होनी चाहिए नवीन।
फिर राजा ने अपने पंडितों की सभा बुलायी।
जब तक कालिदास न आयें, सब कविताओं को पुरानी बताते जाना।
कई कवियों ने आ-आ कर कविताएँ सुनायीं –
यह कविता नयी नहीं है।
मैंने इसे पहले भी सुना है।
मैंने भी।
यह बात कालिदास के कानों में भी पहुँची। वे राजा के मन की बात भाँप गये। कवियों को निराश लौटना पड़ा इसका उन्हें दुख हुआ।
राजा को नयी कविता सुननी है तो नयी ही सुनायी जायेगी।


उन्होंने किसी रास्ते चलते आदमी को बुलाया।
यह कविता जा कर राजा भोज को सुनाओ। उनसे कहना कि यह तुमने लिखी है। वे तुम्हें बहुत पुरस्कार देंगे।
परंतु मैं न कवि हूँ न विद्वान्!
तुम्हें धन तो चाहिए न? मेरी बात मानो – तुम्हें धन मिलेगा, बिगड़ेगा कुछ नहीं।
उस आदमी ने राजा के दरबार में कविता सुनायी–
इक्यानबे करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ आपके पिता ने कभी मुझसे उधार ली थीं। अब तक समय नहीं आया क्या, राजा भोज, उस धनराशि को लौटाने का?
पंडित कविता सुन कर सन्न रह गये।
मेरी कविता आप लोगों ने पहले भी सुनी है न?


"हाँ" कहते हैं तो राजा को ९१ करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ चुकानी पड़ेंगी।
और "ना" कहें तो?
तो कविता नयी मानी जायेगी।
आपके विद्वानों ने कविता पहले न सुनी हो तो यह नयी मानी जानी चाहिए और मुझे एक लाख मुद्राएँ मिलनी चाहिएँ।
राजा भोज ग्रामीण की इस चतुराई पर प्रसन्न हो गये।
कविता तुम्हारी नयी है। लो यह पुरस्कार।
जुग-जुग जिओ, राजा भोज!
अब एक बात बताओ। कविता तुमने स्वयं लिखी है?
ज...जी... हाँ, महाराज।


यह धन तुम्हारा हो चुका... तुम सच बोलो... झूठ बोले तो दंड मिलेगा।
मैंने नहीं, गाँव में एक विद्वान हैं, उन्होंने लिखी है।


कालिदास ही वह विद्वान् हैं। कौन-सा गाँव है तुम्हारा? मुझे उन विद्वान् से मिलना है।


वे गाँव जा पहुँचे –
इस झोंपड़ी में रहते हैं।


कालिदास! मैं समझ गया कि कविता दे कर उस आदमी को तुम्हारे अतिरिक्त कोई नहीं भेज सकता। मेरी अनुचित बात भूल जाओ, कविराज, और दरबार में चलो।
जैसी आपकी इच्छा, राजन्।


इस मेल-मिलाप के बाद भी उनमें मतभेद बने रहे। जब भी कोई ऐसी-वैसी बात होती, कालिदास कहीं चले जाते और बहुत मान-मनुहार के बाद ही लौटते। एक बार ऐसा हुआ कि उन्होंने वापस आने से इन्कार कर दिया।
महाराज, कालिदास कोई ५०मील दूर गाँव में हैं। मैंने उनसे बहुत विनती की किंतु उन्होंने एक नहीं सुनी।
मैं ही जा कर उन्हें लाऊँगा।
राजा भोज की इच्छा यह जानने की हुई कि उनके बारे में कालिदास के विचार क्या हैं।
भेष बदल कर जाऊँ उनके पास।
प्रणाम! मैं धारा से आया हूँ।
पधारिए! राजा भोज कैसे हैं?
उनका तो हाल में देहांत हो गया।
हे राम!


कालिदास को इतना दुख हुआ कि वह कविता बन कर फूट पड़ा।
धारा नगरी का आधार जाता रहा, वाग्देवी सरस्वती का सहारा जाता रहा, विद्वानों का आश्रयदाता जाता रहा, क्योंकि राजा भोज स्वर्ग सिधार गये।
आखिर, आज तुमने कविता में मेरा गुणगान किया! कालिदास, मैं समझा था कि ऐसी रचना तुमसे नहीं करवा पाऊँगा!
कालिदास ने राजा को पहचाना और कविता में कुछ परिवर्तन किये –
धारा की आधारशिलाएँ सुदृढ़ रहेंगी, सरस्वती का सहारा बना रहेगा, विद्वानों का आश्रयदाता बना रहेगा, राजा भोज जब तक इस धरती पर विद्यमान हैं।
कुछ समय बाद दोनों में फिर कुछ मनमुटाव हो गया और कालिदास श्रीलंका को चल दिये।



श्रीलंका के नरेश, कुमारदास कालिदास का बड़ा मान करते थे फिर भी कालिदास ने उनके पास न जाने का निश्चय किया।
राजा कुमारदास को मेरे आने का पता चल गया तो वे राजा भोज को सूचना दे देंगे।
मेरी इच्छा अब धारा जाने की नहीं है।
अंतः कालिदास किसी नर्तकी के यहाँ टिक गये।
राजा भोज की ही तरह कुमारदास भी साहित्य तथा कला के बड़े प्रेमी थे।
ये लो एक सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ – तुम्हारी सुंदर रचना का पुरस्कार।
जो कोई इस छंद को पूरा करेगा उसे महाराज एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान करेंगे।


किंतु कोई उस छंद को पूरा नहीं कर पाया। कुछ दिन बीते तो –
...महाराज ने कार्य बड़ा कठिन दिया है।
मैं यत्न करूँ –
क्या छंद है?
“हमने कमल से कमल के प्रस्फुटित होने की बात सुनी तो है परंतु यह देखा किसी ने नहीं है।”
मैंने देखा है –
तुमने! कहाँ?
यहीं। अभी भी देख रहा हूँ... तुम्हारे कमल मुख पर कमल नयन।


बहुत सुंदर है ! इसे लिख दो !
इस छंद पर महाराज अवश्य पुरस्कार देंगे। किंतु वह कालिदास ले लेगा। उसे नहीं लेने दूँगी। मेरे हाथ में रहेगा तो आभूषण आदि लाऊँगी।
उसने तुरंत कालिदास के छुरा भोंक दिया।
आह... वासंती ! तुम्हारा शाप... सत्य हो गया।


नर्तकी ने छंद कुमारदास को सुनाया।
सुंदर! महान् है इसका रचनाकार!
आपका अनुग्रह है।
शैली जानी-पहचानी लगती है... यह तो कालिदास की रचना जैसी है।
नर्तकी की घबराहट से कुमारदास का संदेह और बढ़ गया।
यह रचना सचमुच तुम्हारी है?
हाँ, राजन्!
तुमने किसी की भी सहायता के बिना लिखी हैं ये पंक्तियाँ?
हाँ...


तुम झूठ बोलती हो। सच बताओ अन्यथा कालकोठरी में बंद करवा दूँगा!
मुझे क्षमा करें!
मुझे लालच ने अंधा कर दिया था। रचनाकार की मैंने हत्या कर दी!
निर्दयी नारी! तूने कालिदास की हत्या कर दी!
कुमारदास तुरंत नर्तकी के घर गये।
हे भगवन! थोड़े-से धन के लोभ में इस नारी ने इस महान् व्यक्ति के प्राण ले लिये।
कुमारदास ने कालिदास का दाह-संस्कार करवाया। अग्नि ने कवि के पार्थिव शरीर को घेर लिया...
...तो राजा शोक से इस कदर विह्वल हो गये कि खुद भी उसी चिता में कूद पड़े और उनका शरीर भी जल कर राख हो गया।

दिव्यदृष्टा

कालिदास

महाकवि कालिदास को उनके महाकाव्यों - रघुवंशम, कुमारसंभवम तथा मेघदूतम् एवं नाटकों ऋतुसंघारम्, अभिज्ञान शाकुंतलम्, विक्रमोवर्षीयम् और मालविकाग्निमित्रम् जैसी अनेक रचनाओं से अपार ख्याति मिली। कालिदास की रचनाओं में प्रकृति एवं दृश्यों का अतिसुंदर एवं सजीव वर्णन है, कहीं - कहीं तो उनका मानवीयकरण भी किया गया है। स्थलों के वर्णन में यथार्थ बोध होता है। उन्होंने नारी के रूप लावण्य का वर्णन बड़ी कोमल भावना से किया है। उनकी सभी कृतियां उन्हें विद्वान रचनाकार के रूप में स्थापित करती हैं और उनका नाटक अभिज्ञान शाकुंतलम् उनकी सर्वश्रेष्ठ रचना है। कालिदास शेक्सपियर और गेटे के समकक्ष हैं तथा साहित्य संसार में चिरस्मरणीय हैं। उनके व्यक्तिगत जीवन के बारे में जानकारी के अभाव ने ही दंतकथाओं को जन्म दिया है। प्रस्तुत रचना एक ऐसी ही दंतकथा पर आधारित है।

ISBN 978-81-8482-273-1